North Asian International Research Journal of Multidisciplinary

CIF IMPACT FACTOR:4.465

ISSN: 2454-2326 Vol. 3, Issue-10 October-2017

''उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूरसंचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन''

बीर भवानी

पी०एच०डी०(शिक्षाशास्त्र) छात्र

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा

धारवाड़, कर्नाटक

वर्तमान तकनीकी एवं औद्योगिकरण के युग में माध्यमिक शिक्षा की अपेक्षा उच्च शिक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। यहां यह प्रासंगिक है कि उच्च शिक्षा के लिए विद्यार्थियों में उचित शैक्षिक आकांक्षा का विकास अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस सन्दर्भ में यह जानना प्रासंगिक है कि दूरसंचार विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा किस प्रकार और किन संचार माध्यमों से प्रभावित होती है।

टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रभाव सम्बन्धी शोध में लोइस ने पाया कि ''टेलीविजन के बहुत से कार्यक्रम ज्ञान की उत्कृष्ट रूचि को प्रोत्साहित करते हैं।'' इस सन्दर्भ में विचार करते हुए वे आगे कहते हैं– ''जनसंचार के माध्यमों जैसे चलचित्र, रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें आदि के बिना आधुनिक जीवन अधूरा ही है। लोगों में सामाजिक परिवर्तनों को तेज करने के लिए जागरूकता उत्पन्न करने और वैज्ञानिक प्रकृति की शिक्षा, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि मूल्यों को लोगों तक पहुँचाने तथा उच्च शिक्षा के प्रसारके लिए जनसंचार माध्यमों की अत्यन्त आवश्यकता है।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान समय में शिक्षा का कोई स्तर नहीं है जो दूर संचार माध्यमों से प्रभावित न होता है। शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर छोटे–छोटे बच्चे मनोरंजन एंव सूचना प्राप्त करने के लिए दूरसंचार माध्यम टेलीविजन, कम्प्यूटर, मोबाइल आदि का प्रयोग करते हैं। माध्यमिक स्तर पर छात्र मनोरंजन, सामाजिक कौशलों के विकास के लिए दूरसंचार माध्यमों का प्रयोग प्रयोग करते हैं उच्च शिक्षा स्तर पर विद्यार्थी दूर संचार माध्यमों का प्रयोग जीवन मूल्यों के विकास, सामाजिक विकास, व्यावसायिक विकास के साथ–साथ ज्ञानवृद्धि हेतु करते हैं। सामान्य रूप से देखने में आता है कि गॉव की अपेक्षा शहरों में

दूरसंचार साधनों का अधिक प्रयोग किया जाता है। शिक्षा का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां दूरसंचार माध्यमों का प्रयोग न होता हो। सामान्य शिक्षा के साथ–साथ व्यावसायिक शिक्षा का तो दूरसंचार माध्यमों के बिना चलना कठिन है। दूरसंचार माध्यमों के प्रभाव को यदि शिक्षा प्रक्रिया की सहायता के रूप में देखा जाए तो शिक्षा हर पल दूरसंचार माध्यमों से प्रभावित है। दूरसंचार क्रान्ति का प्रभाव प्राथमिक शिक्षा स्तर से ही देखा जा सकता है। प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की विद्यालय में उपस्थिति, विद्यार्थियों के लिए गृहकार्य, छुट्टियों की सारी जानकारी दूरसंचार माध्यमों (ईमेल, व्हाट्स एप, फोन आदि) से विद्यार्थियों के माता–पिता को भेजी जाती है। देखने में तो यहां तक आता है कि जिन बच्चों को मोबाइल, टेलीविजन आदि पर शैक्षिक कार्यक्रम जैसे गिनती, वर्णमाला, सामान्य जानकारी आदि दी जाती है वे बच्चे उसे शीघ्र एवं आसानी से सीख लेते हैं तथा शिक्षा के प्रति अधिक झुकाव बन जाता है। माध्यमिक शिक्षा स्तर पर देखने में आता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा, दूरसंचार माध्यमों का शैक्षिक क्षेत्र में अधिक प्रयोग करते हैं। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक, भावात्मक, सामाजिक पक्षों पर अधिक प्रभाव पड़ता है। जिससे उनकी शैक्षिक अभिरूचि भी प्रभावित होती है। उच्च शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि पर दूरसंचार माध्यमों का अधिक प्रभाव पड़ता है। पूर्व में हुए शोधकार्यों के आधार पर पता चलता है कि जिन विद्यार्थियों द्वारा दूरसंचार माध्यमों (टेलीविजन, रेडियो, कम्प्यूटर, मोबाइल आदि) का प्रयोग किया जाता है तो उनका उच्च शिक्षा के प्रति उनमुखीकरण बढ़ता है। और जिन विद्यार्थियों द्वारा दूरसंचार माध्यमों का प्रयोग नहीं किया जाता है या बहुत अधिक किया जाता है तो उनका शैक्षिक उन्मुखीकरण कम होता है।

शोधकर्ता ने सामान्यतः देखा कि विद्यार्थियों द्वारा दूरसंचार माध्यमों का किसी न किसी रूप में प्रयोग किया जाता रहता है। साथ ही शोधकर्ता ने यह भी देखा कि प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा स्तर की अपेक्षा उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा दूरसंचार माध्यमों का अधिकतर प्रयोग किया जाता है। इस बात को देखकर शोधकर्ता के मन में विचार आया कि इस बात का पता चलाया जाए कि उच्च शिक्षा में अध्ययन में कर रहे विद्यार्थियों पर दूरसंचार माध्यमों का क्या वास्तव में प्रभाव पड़ता है। क्या उनका उच्च शिक्षा के प्रति शैक्षिक उन्मुखीकरण प्रभावित होता है।

छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उनमुखीकरण पर दूरसंचार माध्यमों का क्या प्रभाव पड़ता है। क्या सामान्य विषय (परम्परागत) और व्यवसायिक विषयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का शैक्षिक उनमुखीकरण दूरसंचार माध्यमों से सामान रूप से प्रभावित होता है या इसमें कोई अन्तर है। इसी प्रकार से छात्र एवं छात्राओं के उन्मुखीकरण पर दूरसंचार माध्यमों का क्या प्रभाव पड़ता है। पत्राचार एवं नियमित विद्यार्थी भी दूरसंचार माध्यमों से प्रभावित होते हैं। इन्हीं बातों पर विचार करते हुए शोधकर्ता ने अपनी पर्यवेक्षिका से विचार विमर्श किया और ''उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूरसंचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन'' शोध बिन्दु पर शोधकार्य करने का निश्चय किया।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध अध्ययन का समस्या कथन निम्नवत है–

''उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूरसंचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन''

समस्या कथन में प्रयुक्त पदों की सक्रियात्मक परिभाषाऐं

समस्या कथन में प्रयुक्त पदों की सक्रियात्मक परिभाषाऐं निम्नलिखित हैं:–

उच्च शिक्षाः–

उच्च शिक्षा का अर्थ है विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी महाविद्यालयों लिबरत आर्ट कालेजों एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाने वाली शिक्षा से है

दूर संचार माध्यमः–

शिक्षा में दूर संचार माध्यम का तात्पर्य शिक्षा में तकनीकी एवं सूचना जैसे– टी0वी0, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मोबाइल आदि के प्रयोग से है।

शैक्षिक उन्मुखीकरणः–

शैक्षिक उन्मुखीकरण का तात्पर्य शिक्षा के प्रति रूचि एवं लगाव से है। शैक्षिक उन्मुखीकरण शिक्षा के प्रति झुकाव का बढ़ना है। जिसके द्वारा विद्यार्थी शिक्षा के प्रति आकर्षित होते हैं तथा उनकी शिक्षा प्राप्त करने में रूचि बढ़ती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:–

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूरसंचार माध्यमों में प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत परम्परागत एवं तकनीकी विषयों कें विद्धार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3० उच्च शिक्षा में अध्ययनरत नियमित एवं पत्राचार विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4० उच्च शिक्षा में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना:

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं निम्नखिलिखत हैं–

1 उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

2 उच्च शिक्षा में अध्ययनरत परम्परागत एवं तकनीकी विषयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

3 उच्च शिक्षा में अध्ययनरत नियमित एवं पत्राचार विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

4 उच्च शिक्षा में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन का सीमांकन:

1 प्रस्तुत शोध अध्ययन मिर्जापुर मण्डल (उत्तर प्रदेश) जिले तक सीमित है।

2 प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक सीमित है।

3 प्रस्तुत शोध अध्ययन 120 न्यादर्श तक सीमित है।

4 प्रस्तुत शोध अध्ययन मध्यमान, टी परीक्षण तक सीमित है।

5 प्रस्तुत शोध अध्ययन स्वनिर्मित शैक्षिक उन्मुखीकरण मापनी जिसमें 100 प्रश्न है तक सीमित है।

6 प्रस्तुत शोध अध्ययन सामान्य विषय बी0ए0 तथा तकनीकी विषय बी0सी0ए0 तक सीमित है।

शोध विधि:

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य उच्च शिक्षा अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन करना है। इसके लिए प्रयोगात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

शोधकर्ता, उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर मण्डल का रहने वाला है इसलिए मिर्जापुर मण्डल में शोधकर्ता की रूचि भी थी। अतः शोधकर्ता द्वारा शोध अध्ययन हेतु मिर्जापुर मण्डल (उत्तर प्रदेश) के उच्च शिक्षा स्तर के हिन्दी माध्यम से अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है। मिर्जापुर मण्डल के विद्यार्थियों को शोध जनसंख्या के रूप में लेने से न्यादर्श प्रतिचयन में शोधकर्ता को सुविधा रही है।

न्यादर्श

शोधकर्ता द्वारा शोध अध्ययन हेतु मिर्जापुर मण्डल के 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है जिसमें ग्रामीण एवं शहरी तथा छात्र एवं छात्राओं को समान प्रतिनिधित्व दिया गया है।

शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श का प्रतिचयन

शोधकर्ता द्वारा मिर्जापुर मण्डल के जिलों में से एक जिला चुनने के लिए यादृच्छिक प्रविधि का प्रयोग किया जिसके फलस्वरूप मिर्जापुर मण्डल शोध अध्ययन के लिए प्राप्त हुआ जो शोधकर्ता के लिए अधिक अच्छा रहा क्योंकि शोधकर्ता मिर्जापुर मण्डल का रहने वाला है तथा शोधकर्ता की स्वयं भी मिर्जापुर मण्डल में रूचि भी थी। मिर्जापुर मण्डल का निश्चय होने के बाद शोधकर्ता ने मिर्जापुर मण्डल के उन समस्त विद्यालयों की सूची जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय से प्राप्त की जिनमें बी0ए0, बी0सी0ए0 पाठ्क्रम नियमित या पत्राचार माध्यम से संचालित है। इसके बाद इस सूची को नियमित तथा पत्राचार माध्यम के पाठ्यक्रम के महाविद्यालयों की दो अलग–अलग सूची तैयार की। इन दोनों सूचियों में से चार–चार महाविद्यालयों को इस प्रकार से चुना जिसमें प्रत्येक सूची में से दो–दो ग्रामीण क्षेत्र तथा दो–दो शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित हों। इस प्रकार आठ महाविद्यालयों से 120 विद्यार्थियों को चुनने के लिए महाविद्यालयों के प्राचार्य से मिलकर अपना शोध उद्देश्य बताया तथा बी0ए0 तथा बी0सी0ए0 के विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) की सूची प्राप्त की तथा उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन प्रविधि का प्रयोग किया तथा अपने उद्देश्य के अनुरूप 120 विद्यार्थियों को चयन किया।

शोध उपकरणः

विभिन्न संस्थाओं द्वारा मानकीकृत व प्रकाशित उपकरणों की सूची देखने से यह स्पष्ट हुआ कि प्रस्तुत समस्या पर आाधारित कोई शोध उपकरण उपलब्ध नहीं है। इस परिस्थिति व अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता द्वारा अपने शोध निर्देशक के मार्गदर्शन में शैक्षिक उन्मुखीकरण मापनी निर्मित करने का निर्णय लिया गया। शैक्षिक उन्मुखीकरण मापनी निम्न चरणों में निर्मित हुई

प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधि

शोध अध्ययन की सभी वांछनीय आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने प्रस्तुत अनुसन्धान में मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध अध्याय के निष्कर्ष

- ✓ परिकल्पना .1 से निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनत परम्परागत एवं तकनीकी विषयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों का समान रूप से प्रभाव पड़ता है।
- ✓ परिकल्पना .2 से निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनत परम्परागत एवं तकनीकी विषयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों का समान रूप से प्रभाव पड़ता है।
- ✓ परिकल्पना .3 से निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनत नियमित एवं पत्राचार विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों का समान रूप से प्रभाव पड़ता है।
- ✓ परिकल्पना .4 से निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों का समान रूप से प्रभाव पड़ता है।

भावी शोध हेतु सुझावः

शैक्षिक उन्मुखीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है। सभी देशों एवं सभी उम्र के व्यक्तियों के लिए इसका अध्ययन समान नहीं है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में समय, श्रम एंव साधनों के अभाव के कारण शोधकार्ता द्वारा शोध अध्ययन को परिसीमित किया गया है। अतः इस क्षेत्र में आगे भी शोध अध्ययन किये जा सकते हैं। ऐसे शोध अध्ययनों के लिए सुझाव निम्नलिखित हैंः–

1 शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव के अध्ययन के लिए विशाल समूह को लिया जा सकता है।

2 प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों को चुना है। शोध अध्ययन के लिए हाईस्कूल स्तर, इण्टरमीडिएट स्तर को भी चुना जा सकता है।

3 शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव के अध्ययन के लिए जनजातियों एवं गैर जनजातियों को लिया जा सकता है।

4 शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव के अध्ययन के लिए सामान्य जाति तथा अन्य जातियों के छात्र–छात्राओं को अध्ययन के लिये चुना जा सकता है।

5 शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव के अध्ययन के लिए जनपदों का अलग–अलग चुनाव किया जा सकता है।

6 शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव के अध्ययन के लिए विद्यार्थियों के विभिन्न आयु वर्गो को चुना जा सकता है।

7 शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव के अध्ययन के लिए अध्यापकों को चुना जा सकता है।

8 शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव को बढ़ावा देने वाले कारकों का अध्ययन किया जा सकता है।

9 शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव के अध्ययन के लिए छात्रों के अनेक मनोवैज्ञानिक पक्षों (बुद्धि, व्यक्तित्व आदि) को चुना जा सकता है।

10 शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के अभिभावकों एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के अभिभावकों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

11 विज्ञान संकाय के शिक्षकों एवं कला संकाय के शिक्षकों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

12 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के अध्यापकों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

13 अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

14 अलग–अलग बोर्डों के विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

15 अलग–अलग बोर्डों के अध्यापकों पर शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. बहल, एस0एस0 ;1996द्धए दूरस्थ शिक्षा : अवधारणा एवं प्रणाली भारतीय आधुनिक शिक्षा, अक्टूबर, पृष्ठ– 19
2. गर्ग, एस0 ;2005द्धए भारत में सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण हेतु शैक्षणिक उपग्रह व आई0टी0 सम्वनय तन्त्र, अन्वेषिक : शिक्षक–शिक्षा की भारतीय पत्रिका, 2;1द्धए जून।
3. राय, पी0एन0 ;1987द्धए अनुसंधान परिचय, आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन।
4. शुक्ला, एस0पी0 ;1983द्धए शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
5. शुक्ल, पी0 ;1992द्धए शैक्षिक दूरदर्शन के उपयोग की प्रासंगिकता, भारतीय आधुनिक शिक्षा, जुलाई, पृष्ठ 55.58
6. लाल, आर0बी0 ;2006द्धए भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएं, मेरठः रस्तोगी पब्लिकेशन्स।
7. सक्सेना, एन0आर0एस0 एवं चतुर्वेदी, एस0 ;2006द्धए उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, मेरठ : आर0 लाल बुक डिपो।

8. कपिल, एच0के0 ;1993द्धए सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।

9. गुप्ता, एस0पी0 ;2005द्धए आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

10. पचौरी, जी0 ;2008द्धए उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, मेरठ : लायल बुक डिपो।

11. लाल, आर0बी0 ;2007द्धए शिक्षक के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन्स।

12. लाल, आर0बी0 एवं जोशी, एस0सी0 ;2005द्धए शैक्षिक मापन मूल्यांकन एवं सांख्यिकी, मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन्स।

13. मिश्र, पी0के0 ;2005द्धए एजुसैट–पृष्ठभूमि, प्रासंगिकता एवं एवं चुनौतियां, भारतीय आधुनिक शिक्षा, 23;4द्धए अप्रैल 2005

14. छाबड़ा, पी0 ;2005द्धए सहयोगी अधिगम–एक नवाचार, भारतीय आधुनिक शिक्षा, 23;4द्धए अप्रैल 2005ए 35.56

15. सागर, ए0 ;2006द्धए प्राथमिक विद्यालयों में ऑडियो कार्यक्रमों के उपयोग के विविध आयाम–एक अध्ययन, प्राथमिक शिक्षक, जनवरी, 66.72

16. बहल, आर0 एवं सिंह, डी0 ;2008द्धए भारत में शैक्षिक व्वस्था का विकास, मेरठ : साधना प्रकाशन।